Research Paper | Sociology | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 8 | August 2023

संस्कृतिकरण की अवधारणा

Sh. Takdeer Singh

Assistant Professor in Sociology, Desh Bandhu Gupta Govt. College, Sector-18, Panipat

ABSTRACT

मैसूर नरसिम्हाचार श्री निवास (एम०एन०श्री निवास) भारत के प्रमुख प्रारम्भिक समाजशास्त्रीयों में से एक हैं। जिन्होंने अपने लेखनों और क्षेत्र–कार्य परम्परा की भारत के समाजशास्त्र पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।श्री निवास और उनकी अवधारणा"प्रभुत्व जाति और संस्कृतिकरण का भारतीय समाजशास्त्र में महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में नहीं अपितु विदेशो समाज वैज्ञानिकों ने भी अपने लेखनों में विशेषकर संस्कृतिकरण की अवधारणा का यथा स्थान उल्लेख किया है।

भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तन एवं समाज को समझने के लिए प्रमुख भारतीय समाजशास्त्री में श्रीनिवास का प्रमुख योगदान है। श्रीनिवास रेड क्लिफ ब्राउन के परम शिष्यो में से एक माने जाते हैं। श्रीनिवास ने सन् 1942 में रेडक्लिफ ब्राउन के सुझाव पर मैसूर के रामपुरा गांव का अध्ययन किया था। उनके विषय थे– " विवाह और परिवार"उनकी पुस्तक "मैरिज एंड फैमिली इन मैसूर" के नाम से जानी जाती है। प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण का प्रभाव श्रीनिवास की पुस्तक "रिलिजन एण्ड सोसाइटी" अमंग दि कुगर्स आफ साउथ इंडिया" है। श्रीनिवास ने इस पुस्तक में धर्म के सम्बंध को वृहद सामाजिक संगठन के सन्दर्भ में देखा है।

श्रीनिवास सामाजिक परिवर्तन को धर्म के साथ जोड़ते हैं। कहीं भी वे यह नहीं देखे कि राज्य और धर्म का क्या ताल्लुक है। उनके अध्ययन का केन्द्र संरचनात्मक प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण है। समाजशास्त्र में श्रीनिवास की ख्याति उनकी अवधारणाओं के लिए जानी जाती है। कुर्ग के अध्ययन में उन्होंने संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण समझा। पहले इन्होंने इसका ब्राह्मणीकरण किया और बाद में परिवर्तन कर संस्कृतिकरण का नाम दिया। उनकी दूसरी पर कार्यात्मक अवधारणा प्रभुजाति की है। इसका उद्भव रामपुरा गांव की अध्ययन सामग्री से है। यह गांव दक्षिण कर्नाटक का है। हम यहां पर श्रीनिवास द्वारा प्रस्तुत संस्कृतिकरण की अवधारणा की विस्तृत व्याख्या करेंगे।1

मूल शब्द: संस्कृतिकरण, भारतीय समाज, रेडक्लिफ ब्राउन, संरचनात्मक प्रकार्यात्मक, ब्राह्मणीकरण, आदर्श प्रतिमान, सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन, समाजशास्त्रीय पूर्व–दशाएं आदि।

परिचय

श्रीनिवास का जन्म 1916 में हुआ था। उन्होंने मैसूर विश्वविद्यालय से 1936 में सामाजिक दर्शनशास्त्र में बी.ए.(आनर्स) किया तथा अपनी स्नातकोत्तर उपाधि बम्बई विश्वविद्यालय से जी०एस०घुरिये के सानिध्य में प्राप्त की। बाद में आप उच्च अध्ययन के लिए ब्रिटेन गए। जहां आपने रैडक्लिफ ब्राउन और इन्वास प्रिचार्ड जैसे महान मानवशास्त्रीयों के सन्सर्ग में रहकर आगे की पढ़ाई पूरी की। कर्नाटक में उनके मूल निवास स्थान का लगाव और उनका शोध गांव रामपुरा का आकर्षण आखिरकार उन्हें बैंगलोर खींच लाया। इससे पहले आक्सफोर्ड में शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने भारत में आकर बड़ौदा में एम०एस० विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के एक नए विभाग की स्थापना की। इसके पश्चात रामपुरा में सामाजिक आर्थिक परिवर्तन संस्थान की स्थापना की। इस संस्था के अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने समाजशास्त्र, सामाजिक मानवशास्त्र और यहां तक कि अर्थशास्त्र के बीच के अन्तर को पाटने का प्रयास किया। 1999 में श्री एम ०एन० निवास स्वर्ग सिधार गए।

श्रीनिवास की प्रमुख कृतियां इस प्रकार हैः

1. Marriage and Family in Mysore (1942).
2. Religion and Society Among the Coorgs of South India (1952).
3. India's Village (1955).
4. Caste in Modern India and others Essays (1962).
5. The Dominate caste and others Essays (1986).
6. The Cohesive Role of Sanskritization (1989).
7. Sociology in Delhi (1993).
8. Village,caste,Gender and Method (1996).2

संस्कृतिकरण की अवधारणा

संस्कृतिकरण की अवधारणा को नये अर्थो और सन्दर्भ में प्रयोग करने का श्रेय श्री एम ०एन०निवास जी को जाता है। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1952 में अपनी पुस्तक "Religion and Society A mong the Coorgs of South India" में किया। दक्षिण भारत के कुर्गो के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन के अध्ययन के समय संस्कृतिकरण की अवधारणा का जन्म हुआ। संस्कृतिकरण शब्द का प्रयोग उन्होंने कुर्ग जाति के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक जीवन के विश्लेषण करने के सम्बंध में किया।

एम०एन०श्री निवास ने संस्कृतिकरण की अवधारणा को परिभाषित करते हुए कहा है कि *"संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जाति या कोई जनजाति अथवा अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और जीवन पद्धति को बदलते हैं।3.*

संस्कृतिकरण की विस्तृत व्याख्या करते हुए प्रो० एम०एन०श्री निवास ने कहा है कि "संस्कृतिकरण का अर्थ केवल नये रीति–रिवाज एवं आदतों को ग्रहण करना नहीं है, बल्कि नये विचारों व मूल्यों की भी अभिव्यक्ति करना है जो कि धार्मिक साहित्य तथा धर्म निरपेक्ष संस्कृत साहित्य के विशाल शरीर में बहुधा अभिव्यक्त हुआ है"! कर्म, धर्म,पाप, पुण्य,माया, संसार एवं मोक्ष सामान्य संस्कृतिक धार्मिक विचारों के उदाहरण हैं, और जब कोई समाज पूर्णतया संस्कृति को धारण कर लेता है तो यह शब्द उनकी बातचीत में प्रायः दिखाई पड़ते हैं। संस्कृति पौराणिक कथाओं और कहानियों द्वारा जन–सामान्य तक पहुंचती है।

वास्तव में संस्कृतिकरण की अवधारणा को श्रीनिवास ने जहां नवीन अर्थ दिया है, वहां इसे बहुत संर्किण व हल्के ढंग से प्रयोग भी किया है। अनेक स्थानों पर संस्कृतिकरण अस्पष्ट और भ्रमित दिखाई पड़ता है। इसका मुख्य कारण है कि संस्कृतिकरण का प्रयोग दक्षिण भारत में कुर्ग जाति के व्यक्तियों के सामाजिक, धार्मिक जीवन के अध्ययन में किया गया। श्रीनिवास ने इस तथ्य को स्वीकार किया है। इस सन्दर्भ में संस्कृतिकरण की अवधारणा संर्किण हो कर रह जाती है किन्तु श्रीनिवास यह आशा रखते हैं कि संस्कृतिकरण का प्रयोग अन्य मानवशास्त्रीय अध्ययन में किया जा सकता है। अनेक स्थानों पर यह आभास होता है कि श्रीनिवास संस्कृतिकरण शब्द का प्रयोग ब्राह्मणीकरण के स्थान पर कर रहे हैं। इसे वे किसी सीमा तक स्वीकार भी करते हैं। ब्राह्मणीकरण शब्द उन्हें सही मालूम नहीं पड़ता है, इसलिए वे संस्कृतिकरण शब्द का प्रयोग करते हैं।

संस्कृतिकरण की विशेषताएं

1. संस्कृतिकरण एक प्रक्रिया है जिसमें निम्न जाति के लोग उच्च जाति के लोगों के विभिन्न कार्यों का अनुसरण करने का प्रयास करते हैं।
2. संस्कृतिकरण का प्रयोग श्रीनिवास ने ब्राह्मणीकरण के स्थान पर किया है।
3. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया केवल छोटी जातियों में नहीं पाई जाती है बल्कि इसे अन्य या जनजातियों में भी सरलता से देखा जा सकता है।
4. संस्कृतिकरण निम्न जाति के लोगों के लिए एक ऐसा माध्यम है जिससे वे अपनी वर्तमान आर्थिक सामाजिक स्थिति से ऊपर उठाने का प्रयास करता है।
5. संस्कृतिकरण में केवल निम्न जाति के लोग केवल ब्राह्मणों के व्यवहारों व आदतों , रीति–रिवाजों आदि का ही अनुसरण नहीं करते हैं, बल्कि वे क्षेत्रिय तथा वैश्य जातियों के व्यवहारों, आदतों आदि का भी अनुसरण करने का प्रयास करते हैं।
6. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति अपनी वर्तमान आर्थिक सामाजिक स्थिति से सन्तुष्ट नहीं है। इसलिए वह अपने से उच्च वर्ग अथवा जाति की विशेषताओं को अपनाता है।
7. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में जाति अथवा समूह की रीति–रिवाज, कर्म–कांड, तथा जीवन पद्धति किसी उच्च एवं द्विज जाति के अनुरूप ढल जाती है।4

संस्कृति की समाजशास्त्रीय पूर्व–दशाएं

एम०एन०श्री निवास ने संस्कृतिकरण की तीन पूर्व–दशाओं का उल्लेख किया है जो कि समाजशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

1. वह जाति अथवा समूह जिसके रीति–रिवाजों को अपनाया जा रहा है,आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है।
2. वह जाति,जनजाति अथवा अन्य समूह जो कि संस्कृतिकरण को अपनाने का प्रयास कर

Copyright© 2023, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

रहा है, उसमें अपना सामाजिक स्तर ऊंचा करने की प्रेरणा है।

3. संस्कृतिकरण द्वारा अपना स्तर ऊंचा करने वाली जाति अथवा उच्च जाति के समीप रहता है तथा राजनैतिक दृष्टि से अपेक्षाकृत जागरूक हैं।

यह बात भी इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि संस्कृतिकरण का उद्देश्य मात्र किसी निम्न जाति द्वारा उच्च जाति के रीति–रिवाजों एवं आदतों को अपनाना नहीं है अपितु नवीन विचारों एवं मूल्यों को सीखना भी है।

संस्कृतिकरण के आदर्श प्रतिमान

श्री निवास के शब्दों में: 'अब मैं अनुभव करता हूं कि अपनी कुर्ग धर्म सम्बंधी पुस्तक और संस्कृतिकरण के ब्राह्मण आदर्श पर अनावश्यक बल दे दिया और अन्य क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र आदर्शों की अनदेखी कर दी थी'' उन्होंने बाद में स्वीकार किया कि यह आदर्श प्रतिमान द्विज वर्ण (ब्राह्मण,क्षत्रिय, एवं वैश्य) अथवा कोई स्थानीय प्रभुजाति हो सकती है। अतः संस्कृतिकरण के दो आदर्श प्रतिमान हैं।:

1. **वर्ग आदर्श प्रतिमानः** निम्न जातियां संस्कृतिकरण द्वारा अपना सामाजिक स्तर ऊंचा करने के लिए सामान्यतः द्विज वर्णों में से किसी एक वर्ण को अपना आदर्श प्रतिमान मानकर उसकी महान परम्परा को (जैसे कि यज्ञोपवित धारणा करना) अपनाने का प्रयास करती है। श्रीनिवास ने ब्राह्मण वर्ण को तथा फोकोक ने क्षत्रिय वर्ण को संस्कृति करण के आदर्श प्रतिमान में अधिक बताया है।
2. **जाति आदर्श प्रतिमानः** संस्कृतिकरण का दुसरा आदर्श प्रतिमान जाति है। सामान्यतः निम्न जातियां किसी स्थानीय उच्च जाति को ही अपना आदर्श मानती हैं। किसी जाति के प्रभुता सम्पन्न होने के लिए उसका अधिकांश भूमि पर अधिकार, अधिक सदस्य संख्या तथा स्थानीय संस्तरण में उच्च स्थान का होना आवश्यक है। राजनैतिक सत्ता, पश्चिमी शिक्षा, आधुनिक व्यवसाय तथा भौतिक शक्ति भी जाति को प्रभुता सम्पन्न बनाने में मदद देती है। 5

संस्कृतिकरण का महत्व

श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण का प्रयोग या इस शब्द का प्रयोग ब्राह्मणीकरण के स्थान पर किया है क्योंकि ब्राह्मणीकरण शब्द का अर्थ सीमित और संर्किण अर्थो में किया जाता है। संस्कृतिकरण की प्रक्रिया का अपना महत्व है जो कि इस प्रकार हैः

1. भारत जैसे महान देश में साधु संन्यासियों, समाज सेवकों आदि ने इस बात का सदैव प्रयत्न किया है कि निम्न जाति के लोग उच्च जाति की विशेषताओं को अपनाते हैं परम्परागत संर्किण विश्वास व आदतों का त्याग करें। इस से छोटी बड़ी जातियों के मध्य जो कटुता एवं अलगाव है उसमें कमी आएगी।
2. भारत में समय– समय पर अनेक ऐसे सम्प्रदायों का जन्म हुआ है जिसमें इस बात का प्रचार किया है कि निम्न जातियों के लोग अपनी उन चीजों को त्याग दें जिनके कारण स्वर्ण उन्हें नीचा समझते हैं। अच्छे गुणों एवं कार्यो को अपनाकर वे भी अपने को समाज का अच्छा आदमी बनाएं।
3. आजादी से पूर्व निम्न जातियों के लोगों में इतना साहस नहीं था कि वे स्वर्ण जातियों के किसी गुण एवं संस्कार का अनुसरण करते किन्तु आजादी के बाद भारतीय सरकार ने निम्न जातियों को विशेष सुविधाएं एवं सुरक्षा देकर उनमें आत्मबल तथा आत्मविश्वास को उत्पन्न किया है। इस लिए वे आज जातिगत चीजों को छोड़कर उच्च जाति की विशेषताओं को तीव्रता से अपना रहे हैं।
4. स्वतंत्रता के पश्चात निम्न जातियों के लोगों में जहां राजनैतिक जागरूकता में वृद्धि हुई वहां उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। इस कारण से भी निम्न जाति के लोग उच्च जाति की विशेषताओं को तीव्रता से अपना रहे हैं।
5. संस्कृतिकरण ने निम्न जाति की युवा पीढ़ी में नूतन आत्मविश्वास उत्पन्न किया है। उसमें समानता की भावना को जन्म देकर उन्हें प्रगतिशील बनाने का प्रयास किया है।
6. संस्कृतिकरण का यह योगदान है कि हिन्दू संस्कृति व धर्म के कुछ गुण केवल स्वर्ण तक सीमित न होकर रह जाएं बल्कि उनका विश्वास निम्न जातियों के लोगों में भी हो।
7. संस्कृतिकरण निम्न जातियों के लोगों को भी समाज में प्रतिष्ठा,आदर एवं सम्मान के योग्य बनाती है।
8. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने निम्न जाति और उच्च जाति के मध्य जो सांस्कृतिक दूरी थी,उसे समाप्त करने में मदद दी है।
9. जाति के आधार पर जिन धार्मिक एवं परम्परागत कार्यो का जाल बिछाया गया है, संस्कृतिकरण की प्रक्रिया उसे समाप्त करने में आवश्यक भूमिका अदा कर रही है।
10. संस्कृतिकरण निम्न जाति के लोगों के लिए आगे बढ़ने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान देती है। 6

संस्कृतिकरण की सहायक अवस्थाएं

आधुनिक काल में भारतीय समाज में कुछ ऐसी अवस्थाएं हैं जिनके कारण संस्कृतिकरण की प्रक्रिया की क्रियाशीलता सरल हो जाती हैं। वे इस प्रकार हैं:

1. **आधुनिक शिक्षाः** यह आधुनिक शिक्षा का ही परिणाम है कि लोग यह जानते हैं कि समाज को ऊंचा पद या स्थान प्राप्त करने के लिए जातीय नियमों का पालन करना उतना आवश्यक नहीं है जितना कि शिक्षा के आधार पर व्यक्तिगत योग्यता को बढ़ाना। साथ ही आधुनिक शिक्षा के आधार पर ही आज प्रजातंत्रीय व समानता के सिद्धान्तों की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। ये सिद्धान्त इस बात पर बल देते हैं कि जन्म और परिवार के आधार पर उच्च– नीच का विभाजन उचित नहीं और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों के आधार पर अपनी सामाजिक स्थिति को ऊंचा उठाने का अधिकार है। अतः स्पष्ट है कि संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है।
2. **नगरों का विकासः** जातीय भेदभाव के बारे में अधिक सचेत नहीं होते। ऐसी परिस्थिति में बहुत से लोग यह लाभ उठाते हैं, वे अपनी वास्तविक जाति को छिपाकर अपने को ऊंची जाति का सदस्य कहने लगते हैं।वे व्यक्ति अपरिचित होते हैं, अतः वे सच कह रहे हैं या झूठ इसे जांचा नहीं जा सकता। वास्तव में नगरों में अगर निम्न जाति या समूह के लोग उच्च जाति के रीति–रिवाज, मूल्य आचार–व्यवहार को अपना भी लेते हैं तो इसकी परवाह तक नहीं करता क्योंकि वहां के लोग कम रुढ़िवादी होने के कारण सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रर्याप्त खुलापन देखने को मिलता है। अतः स्पष्ट है कि नगरों के विकास में संस्कृतिकरण से मदद मिलती है।
3. **धन का महत्वः** आधुनिक भारत अपने परम्परागत आध्यात्मिक रास्ते से हट कर आज भौतिकवादी होता जा रहा है। जिसके कारण हमारे समाज में धन का महत्व अधिक बढ़ गया है। यही कारण है कि आज जिसके पास धन है उसके लिए उच्च जाति के रहन– सहन, रीति–रिवाजों और मूल्यों को अपनाने में कोई परेशानी नहीं होती है। यह इस लिए सम्भव होता है कि क्योंकि नवीन अथः व्यवस्था में धन कमाने के अवसर भी सभी जाति के सदस्यों के लिए समान रूप से उपलब्ध है।
4. **यातायात व संचार के साधनों में उन्नतिः**आधुनिक भारत में यातायात व संचार के साधनों में तेजी से उन्नति होती जा रही है। जिसके परिणामस्वरूप यहां एक ओर सामाजिक गतिशीलता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और दुसरी ओर नए–नए नगरों, व्यवसायों, उधोग,मील और कारखानों की भी उत्पत्ति और विकास होता जा रहा है। फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के जाति, धर्म,प्रदेश व देश के लोगों का आपसी सम्पर्क और विचार विनिमय का क्षेत्र बढ़ता जा रहा है। इससे संकुचित विचारधारा और दृष्टिकोण का अन्त होता है और इसी के साथ जाति–पाति की कठोरता भी। इससे संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को मदद मिलती है।
5. **राजनैतिक सत्ताः** आधुनिक भारत ने प्रजातंत्रात्मक शासन व्यवस्था को अपनाया है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति चाहे उसकी सामाजिक या जातीय स्थिति कुछ भी हो।अपनी योग्यता, कार्यकुशलता, राजनीतिक चतुरता व दलगत स्थिति के आधार पर राजनीतिक सत्ता या शासन की बागडोर को हथिया सकता है और एक बार शासन की बागडोर हाथ में आ जाने पर जातिय स्थिति को भला कौन पूछता है। ऐसी अवस्था में इन लोगों के लिए सम्भव होता है कि उच्च जाति के सांस्कृतिक प्रतिमान को आसानी से अपना लें और जातीय सोपान में अपनी स्थिति को भी ऊंचा उठा ले। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि राजनीतिक सत्ता भी संस्कृतिकरण में सहायक अवस्था है।
6. **सामाजिक अधिनियमः** भारत में कुछ सामाजिक अधिनियम भी संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में सहायक सिद्ध हुए हैं उदाहरणार्थ – अस्पृश्यता अपराध अधिनियम–1955,के अन्तर्गत अस्पृश्यता का अन्त कर दिया गया है और यह निर्देश दिया गया है कि तथाकथित अछूत जातियों के साथ किसी भी तरह का भेदभाव करना अपराध होगा।जो कानून के अनुसार दण्डनीय होगा। इससे इन जातियों के लिए उच्च जाति के सांस्कृतिक प्रतिमान को अपनाने में मदद मिली है,उसी प्रकार सन् 1954 में विशेष विवाह अधिनियम ने अन्तर्जातीय विवाहों की वैधानिक अड़चनों को दूर करके विवाह के माध्यम से निम्न जातियों के लोगों के लिए उच्च जातियों की दुनिया में प्रवेश करना सरल बना दिया है। 7

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया तथा सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन

संस्कृतिकरण की अवधारणा भारतीय समाज में है और विशेष रूप से जाति व्यवस्था में होने वाले सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने में काफी मदद मिली है जो कि इस प्रकार हैः

1. संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसमें एक निम्न जाति या जनजाति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या प्रभु जाति के खानपान, रीति–रिवाजों, कर्मकांडो, विश्वासों, भाषा और जीवन शैली को ग्रहण करती है।इस प्रकार यह प्रक्रिया निम्न जाति में होने वाले विभिन्न सामाजिक– सांस्कृतिक परिवर्तनों को स्पष्ट करती है।
2. संस्कृतिकरण की प्रकिया द्वारा एक निम्न जाति की स्थिति में पद मूलक परिवर्तन आता है जिससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ जाती है और उसकी स्थिति उसके आसपास की जातियों से उच्च हो जाती है।
3. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया जाति प्रथा में गतिशीलता की धोतक है। सामान्यतः यह माना जाता है कि जाति प्रथा एक कठोर व्यवस्था है और इसकी सदस्यता जन्मजात होती है। व्यक्ति एक बार जिस जाति में पैदा हो जाता है जीवन भर उसी जाति का सदस्य बना रहता है। परन्तु यह धारणा सदैव ही सही नही है। संस्कृतिकरण द्वारा जाति बदलना सम्भव है।
4. संस्कृतिकरण की प्रकिया व्यक्ति या परिवार की नहीं वरन् एक जाति समूह की गतिशीलता की धोतक है।
5. संस्कृतिकरण उस प्रक्रिया को भी प्रकट करता है जिसके द्वारा जनजातियां हिन्दू जाति व्यवस्था में शामिल होती हैं। ऐसा करने के लिए जनजातियां को हिन्दूओं की किसी जाति की जीवन शैली को ग्रहण करना पड़ता है।
6. संस्कृतिकरण की प्रकिया भूतकाल और वर्तमान काल में जाति व्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों को भी स्पष्ट करती है।
7. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया निम्न जातियों के विवाह एवं परिवार प्रतिमानों में होने वाले परिवर्तनों को भी व्यक्त करती है।, विधवा विवाह निषेध का पालन तथा संयुक्त परिवार प्रणाली को उच्च जातियों की तरह अपनाती है। 8

संस्कृतिकरण के प्रकार्य

संस्कृतिकरण के द्वारा भारतीय समाज में किए जाने वाले कार्य इस प्रकार हैं:

1. अनुकूलनः संस्कृतिकरण करने वाला समूह संस्कृति करण की प्रकिया द्वारा सामाजिक रूप से अनुमोदित दिशा की ओर अग्रसर होता है तथा द्विज जातियों या प्रभु जातियों की जीवन पद्धति का अनुकरण कर अपनी

सम्पूर्ण जीवन पद्धति को बदलने का प्रयास करता है।

2. मनोवैज्ञानिक तनाव को दूर करना: संस्कृतिकरण में संस्कृतिकरण करने वाला गतिशील समूह जिस उच्च जाति का अनुकरण करता है,उसके साथ सम्पर्क का प्रतिमान अपनाया जाता है, गतिशील समूह उससे परिचित होता है। इस प्रकार से यह मनोवैज्ञानिक तनाव एवं अनिश्चितताओं को दूर करता है।
3. प्रतिष्ठा सम्बंधी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि: संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में सामाजिक रूप से गतिशील समूह अथवा संस्कृतिकरण करने वाली जाति द्विज या अन्य समूह की प्रतिष्ठा को प्राप्त करने का प्रयास करती है, जिसके परिणामस्वरूप गतिशील समूह की जातीय संरचना में उच्च स्थान प्राप्त करने की इच्छा को सन्तुष्टि मिलती है।
4. सामाजिक विघटन, क्रान्ति, असन्तोष एवं तनाव पर रोक: संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में निम्न जाति की सामाजिक संर–तरण में ऊंचा उठने की इच्छा को सन्तुष्टि मिलने से समाज में निम्न जातियों में उत्पन्न होने वाला असन्तोष कम हो जाता है, जातियों में परस्पर पाया जाने वाला तनाव दूर हो जाता है तथा समाज में क्रांति, एवं विघटन की स्थिति नहीं आ पाती है

आलोचना

संस्कृतिकरण का अपना महत्व,प्रकार्य एवं विशेषताएं हैं फिर भी अनेक विद्वानों ने इसकी आलोचना की है जो कि इस प्रकार है:

डा॰इरावती॰कर्वे के अनुसार: संस्कृति करण की प्रक्रिया केवल सामाजिक गतिशीलता से नहीं जुड़ी हुई है बल्कि यह एक सामान्य सांस्कृतिक पृष्टभूमि की ओर संकेत करती है।इस लिए हमें संस्कृतिकरण के स्थान पर ऐसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो सभी जातियों को मान्य हो।

डा॰एम॰दत॰मजुमदार के अनुसार: संस्कृतिकरण की अवधारणा इस बात पर निर्भर है कि निम्न जाति के लोग उच्च जाति के लोगों की आदतों व संस्कारों आदि का अनुकरण करते हैं। किन्तु यह बात शत्– प्रतिशत उचित नही है क्योंकि सांस्कृतिक तत्वों का आदान–प्रदान आपसी होता है एकतरफा नहीं।9.

डा॰ए॰आर॰देसाई के अनुसार: संस्कृतिकरण की अवधारणा में संरचनात्मक पक्ष की उपेक्षा की गई है क्योंकि आर्थिक कारण जाति संरचना को बनाए भी रखते हैं और परिवर्तनों को जन्म भी देते हैं। इसलिए इसमें आर्थिक कारकों का स्थान महत्वपूर्ण है,उनका अध्ययन करना आवश्यक है अन्यथा संस्कृतिकरण का अध्ययन अधुरा, अस्पष्ट और अवैज्ञानिक रह जाएगा।

REFERENCES

1. दोधी एस० एल०, जैन पी० सी० (2007)भारतीय समाज (संरचना एवं परिवर्तननेशनल पब्लिशिंग, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 446–447,
2. डॉ.आनंद कुमार "समाजशास्त्र"(2020)11जी. विवेक प्रकाशन जवाहर नगर नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–177–178.
3. अग्रवाल, अमित: भारतीय समाज (2021) विवेक प्रकाशन जवाहर नगर नई दिल्ली –पृष्ठ संख्या–75.
4. डॉ बीएन सिंह ग्रामीण समाजशास्त्र (2017) विवेक प्रकाशन 7 यू.ए. जवाहर नगर– नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–178–180.
5. डॉक्टर संजीव महाजन, "आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन"विवेक प्रकाशन जवाहर नगर नई दिल्ली पृष्ठ संख्या–107–110.
6. डॉ बीएन सिंह ग्रामीण समाजशास्त्र (2017) विवेक प्रकाशन 7 यू.ए. जवाहर नगर– नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–185–186
7. डॉ आरएन मुखर्जी, "भारतीय समाज एवं संस्कृति"(2001) विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 341–343
8. शर्मा डी.डी. और गुप्ता एम.एल. समाजशास्त्र (2012). साहित्य भवन सी 17 सिकंदरा औद्योगिक क्षेत्र आगरा 282007 (उ.प्र.) पृष्ठ संख्या–706.
9. डॉ बीएन सिंह ग्रामीण समाजशास्त्र (2017) विवेक प्रकाशन 7 यू.ए. जवाहर नगर– नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–186.